रिज़र्व बैंक ज्ञान-संस्था के रूप में *

दुव्वुरी सुब्बाराव

1. आरबीएससी के स्वर्ण जयंती समारोह में भाग ले कर आनंदित हूँ।

- पिछले 50 वर्षों में आरबीएससी ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता, प्रशिक्षण की नयी-नयी तकनीकों को अपनाने तथा शिक्षण-वक्र पर आगे बढ़ते रहने के लिए महती प्रतिष्ठा अर्जित की है।
- आरबीएससी इस बात से गौरवान्वित हो सकता है कि आरबीआई स्टाफ की कई पीढ़ियों ने यहाँ प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जिन्हें अपने विषय-क्षेत्र, व्यावसायिक निष्ठा और मूल्य आधारित आचरण के लिए जाना जाता है।
- यह पिछले 50 वर्षों में इस महाविद्यालय के गवर्निंग काउंसिल के भूतपूर्व अध्यक्षों, प्रधानाचार्यों, संकाय सदस्यों तथा स्टाफ के प्रति एक श्रद्धांजलि है।
- महाविद्यालय की स्वर्ण जयंती के अवसर पर उनके योगदान के प्रति सम्मान व्यक्त करने का जो सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है, उससे मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है।
- विशेष रूप से मैं महाविद्यालय के उन प्रधानाचार्यों का अभिनंदन करना चाहता हूँ, जो आज इस समारोह में उपस्थित हैं :

  1. श्री आर.सी.मोदी
  2. श्री ओ.पी.सोढानी
  3. श्री पी.के विश्वास
  4. श्री एस. वेंकटरमण
  5. श्री टी.आर.देवराजन
  6. श्री एम.जेसुदासन
  7. श्रीमती चित्रा चंद्रमौलीश्वरन
  8. श्री एस.करुप्पसामी
  9. डॉ. जे.सदक्कादुल्ला
  10. सुश्री उमा सुब्रमणियन (वर्तमान प्रधानाचार्य)

- कुछ भूतपूर्व प्रधानाचार्य, जो आज उपस्थित नहीं हो सके, वे हैं :

  11. श्री के.के.मुखर्जी
  12. श्री के.एन.वी.नायर
  13. श्री के.हरिहरन
  14. श्री के.शिवरामन
  15. श्री एस.गणेश

आगे देखना - लक्ष्य और अभिलाषा

2. स्वर्ण जयंती वह अवसर होता है, जब हम अतीत की उपलब्धियों पर उत्सव मनाते हैं; इसी तरह यह एक अवसर होता है, जब हम आगे आने वाली चुनौतियों की ओर देखते हुए अपने लक्ष्यों को परिष्कृत और अभलाषाओं को पुनर्नवीकृत करते हैं।

पीछे देख कर आगे देखना

3. अपनी टिप्पणियों में मैं यह कहना चाहता हूँ कि हम अतीत में प्राप्त अनुभवों को देखते हुए आगे की ओर देखें और रिज़र्व बैंक के लक्ष्यों और अभिलाषाओं की कुछ व्यापक रूपरेखा बनायें, जो बदले में आरबीएससी की भूमिका और उत्तरदायित्वों को स्पष्ट करेगी।

केंद्रीय बैंकिंग बदल रही है

4. पिछले पाँच वर्ष में दुनिया ने असाधारण वित्तीय एवं आर्थिक संकट देखा है। केंद्रीय बैंकों पर यह दोष मढ़ा जाता रहा है कि उन्होंने दुनिया को संकट की ओर धकेला है। उनकी प्रशंसा भी की जा रही है कि उन्होंने दुनिया को संकट से उबारा है। यह अवसर केंद्रीय बैंक के दोषों पर बहस करने या उनके वीरोचित कार्यों की प्रशंसा करने का नहीं है।

5. इस अवसर पर मैं जो कुछ भी कहना चाहता हूँ, वह यह है कि वैश्विक वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप और युरो क्षेत्र

* 3 जुलाई 2013 को रिज़र्व बैंक स्टाफ महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर प्रस्तुत गवर्नर महोदय के स्पीकिंग नोट्स

संकट पर कार्रवाई की दृष्टि से पूरी दुनिया में केंद्रीय बैंकिंग में नाटकीय तरीके से बदलाव आ रहा है।

- तगड़ी बहस
  - केंद्रीय बैंकों की स्वायत्ता और जवाबदेही के बारे में
  - मौद्रिक नीति के सबध में उन्हें अधिदेश का अनुसरण करना चाहिए
  - मौद्रिक नीति के परे उनका अधिदेश
- यह बहस भिन्न-भिन्न देशों में विभिन्न तरीके से चल रही है।
- भारत में भी बहस चल रही है।
- हम यह निश्चित रूप से जानते हैं कि हर जगह केंद्रीय बैंकिंग में बदलाव होंगे; भारत में भी बदलाव होंगे।
- ये बदलाव क्या होंगे, यह स्पष्ट नहीं है ।

आरबीआई - ज्ञानार्जन संस्था

6. रिज़र्व बैंक को इस बदलाव का प्रबंध कैसे करना चाहिए?

- एक वाक्य में कहें, तो 'ज्ञानार्जन संस्था बन कर'।

7. यदि किसी ने मुझे चुनौती दी : ज्ञानार्जन संस्था क्या होती है?

8. मैं इसे परिभाषित नहीं कर सकता। लेकिन मैं इसकी व्याख्या कर सकता हूँ।

- ज्ञान का अनुक्रम :
- **आँकड़े → सूचना→ ज्ञान → बुद्धि**

9. अतः, हम किस प्रकार एक ज्ञानार्जन संस्था बन सकते हैं?

- ज्ञान का भंडार बन कर, ज्ञान संचय द्वारा
- आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं

10. ज्ञानार्जन संस्था - पर्याप्त शर्त

i. उस ज्ञान का उपयोग अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए करें

ज्ञान → बुद्धि

ii. ऐसा करते हुए आपका आचरण और कार्य मूल्यों और नीतियों पर आधारित हो।

मेरी टिप्पणियों का केंद्रविंदु

11. एक ज्ञानार्जन संस्था बनने के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए रिज़र्व बैंक को किस प्रकार की विशेषताओं या गुणों को अर्जित करना चाहिए।

12. पहला गुण : वैश्वीकृत होते विश्व में मौद्रिक एवं विनियामक नीतियों का प्रबंध करना

- वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) तथा युरो क्षेत्र संकट ने वैश्वीकृत होते विश्व मे समष्टिआर्थिक प्रबंध की अनिश्चितताओं और दुविधाओं का प्रदर्शन किया है।
- संकट से पहले - हम सोचते थे कि हमें अलग-थलग कर दिया गया है। संकट से यह गलत साबित हुआ है।
- वस्तुतः प्रत्येक देश संकट से प्रभावित हुआ। यदि कोई एक देश ऐसा है, जो प्रभावित नहीं हुआ, तो वह भारत है। बड़े ईएमई के बीच भारत का विश्व के साथ एकीकरण सबसे कम हुआ। यह वैश्वीकरण की ताकत को दर्शाता है।
- क्या इसका मतलब यह है कि हम वैश्वीकरण के लिए भारी मूल्य चुका रहे है ? क्या इसका मतलब यह है कि हम वैश्वीकरण के घेरे से निकल जायें?
- नहीं। यह विचार छोड़ दें।
- वैश्वीकरण एक दुधारी तलवार है। अवसर अनेक हैं। चुनौतियाँ कड़ी हैं।
- भारत को वैश्वीकरण का लाभ मिला। व्यापक नरमी - सौम्य वैश्विक वातावरण। भारत की गति तेज होने का कारण व्यापक नरमी है।
- भारत ने वैश्वीकरण का मूल्य भी चुकाया। संकट से भारत प्रभावित हुआ - वैश्वीकरण की लागत के उदाहरण
- वैश्वीकरण का प्रबंध करें - लागत घटायें
  - लाभ बढ़ायें

13. मौद्रिक नीति में वैश्वीकरण का प्रबंध करना

अपनी नीतियाँ बनाते समय हम किस प्रकार वैश्वीकरण का प्रबंध करते हैं?

- इसके पूर्व मौद्रिक नीति बनाते समय हम केवल घरेलू स्थिति को देखते थे। 1970, 80, 90 के दशकों में - बाह्य स्थिति का कोई संदर्भ नहीं लिया जाता था।
- इसमें मौलिक रूप से बदलाव हुआ है।
- विश्व के साथ भारत के एकीकृत होने क कारण बाह्य गतिविधियाँ हमारी घरेलू समष्टिआर्थिक स्थिति को जटिल, अनिश्चित और मनमाने ढग से प्रभावित करती हैं।
- अब अपनी नीतियाँ बनाने में हमें बाह्य गतिविधियों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। हमारे नीति दस्तावेजों में वैश्विक गतिविधियों के संबंध मे एक महत्वपूर्ण खंड होता है।

उदाहरण 1 : व्यापक निकास

- व्यापक निकास की संभावना - युएस फेड अपने क्यूई को क्रमशः कम करता है।
- यदि आप विश्लेषण करें, तो - फेड ने कुछ भी नया नहीं कहा। लेकिन बाजारों में प्रतिक्रिया हुई।
- वैश्वीकरण का प्रबंध करने का अर्थ यह है कि हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि बाजार के सहभागी किस प्रकार वैश्विक गतिविधियों पर प्रतिक्रिया दिखाते हैं। और यह किस प्रकार हमारी आर्थिक एवं वित्तीय स्थितियों को प्रभावित करता है। और नीतिगत उपाय क्या होना चाहिए?

उदाहरण 2 : बासल III

14. विनियामक क्षेत्र से उदाहरण

- बासल III - कार्यान्वयन 1 अप्रैल 2013 से आरंभ किया गया।
- हमें क्यों बासल III को कार्यान्वित करना पड़ा?
- तर्क : उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) के बैंकों ने अनुचित व्यवहार किया। इन्हीं को ठीक किया जाना था। इन्हें ही उच्चतर पूँजी मानक रखने थे।
- तर्क त्रुटिपूर्ण है। हमारे बैंक विदेश में परिचालन करते हैं। विदेशी बैंक भारत में परिचालन करने आते हैं।
- भारत बाहरी नहीं हो सकता है।
- यह स्वीकृत तथ्य है कि उच्चतर पूँजीगत अपेक्षाएँ और कठोर विनियमन से ऋण और महँगा होगा।
- लेकिन बासल III को कार्यान्वित नहीं करने की लागत इसके कार्यान्वित किये जाने पर आनेवाली लागत से अधिक होगी। वास्तव में लागत-लाभ कलन धनात्मक हो सकता है।

15. पहला गुण : ज्ञानार्जन संस्था - आर्थिक और विनियामक नीतियाँ, दोनों का प्रबंध वैश्वीकृत वातावरण में करें।

- वैश्विक गतिविधियों को समझें।
- घरेलू अर्थव्यवस्था के लिए इसके निहितार्थ को समझें
- इस संबंध में नीतियाँ बनायें

16. दूसरा गुण : ज्ञानार्जन संस्था - बुद्धिमान, परिपक्व, संतुलित निर्णय लें

- सभी प्रकार की बहस, सभी विश्लेषण के बाद नीतिगत निर्णय लेना विवेक का विषय होता है।
- ज्ञान से ले कर बुद्धिमानी के सेतु पर परिचालन करना।

17. उदाहरण 1 : मौद्रिक नीति संबंधी निर्णय

- मौद्रिक नीति संबंधी निर्णय (ब्याज दर को नपा-तुला बनायें)।
- पुनःप्राप्ति का प्रबंध करने की तुलना में संकट का प्रबंध करना।
- संकट : यह महत्वपूर्ण नहीं था कि आपने क्या किया, लेकिन जो किया वह नियमित अंतरालों पर किया।
- पुनःप्राप्ति - नपा-तुला उपाय करना बहुत महत्वपूर्ण था।
- *महाभारत में चक्रव्यूह :* प्रवेश करना आसान था। बाहर निकलना कठिन था।

18. संकट के बाद : वृद्धि-मुद्रास्फीति संतुलन तय करने में विवेक का प्रयोग करना : यदि हम ब्याज दरों को बदलते हैं, तो इसका मुद्रास्फीति पर क्या प्रभाव होगा? वृद्धि पर ? संचरण। आरबीआई की आलोचना।

19. उदाहरण 2 : निक्षेप बीमा

- सकट के दौरान - युके के बैंकों ने अपनी सभी जमाराशियों का बीमा किया।
- हमारे ऊपर दबाव कि हम भी ऐसा करें।
- क्या हम ऐसा करने में समर्थ होंगे? क्या इससे खलबली नहीं मचेगी?

20. उदाहरण 3 : विनियमन की तुलना में लागत और लाभ

- कठोर विनियमन - सुरक्षित वित्तीय प्रणाली, लेकिन दुष्क्रियात्मक वित्तीय प्रणाली भी।
- अत्यधिक या समयपूर्व कठोरता का अर्थ वृद्धि और कल्याण-कार्य में हानि होगा।
- अत्यधिक ढीला विनियमन होने का परिणाम वित्तीय अस्थिरता हो सकती है।
- सही संतुलन बनाने के लिए सही निर्णय लेना अपेक्षित है।
- सही निर्णय लेना ज्ञानार्जन संस्था का प्रमुख गुण होता है।

21. **दूसरा गुण :** बुद्धिमान, परिपक्व और संतुलित निर्णय लेने की सामर्थ्य।

22. तीसरा गुण : निष्पक्ष बनें, हठधर्मी न करें। गैलिलियो और चर्च

- अब तक विज्ञान के इतिहास में हठधर्मी का सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण है गैलिलियो और चर्च के बीच टकराव।
- चर्च ने ब्रह्मांड के प्रचलित भूकेंद्रिक विचार के विरुद्ध ब्रह्मांड के सूर्यकेंद्रिक विचार को मान लेने से इनकार किया।
- कोई हठधर्मी नहीं का अर्थ होता है कि जब कोई नया साक्ष्य सामने आता है, जो प्रचलित विचार को अमान्य कर देता है, तो हम अपने विचार को बदल लेने के लिए इच्छुक हों और नये तर्क को मान लें (थॉमस कुह्न - पैराडिग्म शिफ्ट)।
- गैलिलियो स्वयं पूर्णतया सही नहीं था, क्योंकि वह निश्चल सूर्य में विश्वास करता था।

23. उदाहरण : बैंकिंग क्षेत्र में कारपोरेट

आप बैंकिंग क्षेत्र में कारपोरेटों को आने की अनुमति क्यों देते हैं?

- सही है, उन्हें अब तक अनुमति नही दी गयी है।
- सही है, दुनिया भर में इस संबंध में नियम भिन्न हैं।
- गहन परामर्श, विधिवत विचार-विमर्श और सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद हमने निर्णय लिया है कि बैंकिंग क्षेत्र में कारपोरेटों को प्रवेश करने की अनुमति दी जाये।
- क्यों?
  - कारपोरेटो को अन्य वित्तीय सेवाक्षेत्र में प्रवेश की अनुमति दी गयी है।
  - कारपोरेटों के पास अत्यंत विनियमित क्षेत्रों, यथा, दूर संचार, बिजली, विमानपत्तन में नया व्यवसाय निर्मित और पोषण करने का सुदीर्घ और विश्वसनीय रिकार्ड है
  - कापोरेट पूँजी लगा सकते हैं, अपने व्यावसायिक अनुभव और प्रबंधकीय
    विशेषज्ञता का प्रयोग कर अपना प्रयोजन सिद्ध कर सकते हैं।
  - वित्तीय समावेशन के लिए नवोन्मेषकारी विचार।
- इसके विरोध में तर्क
  - संबद्ध उधार की गुंजाइश, लोक-न्यास का उपयोग निजी लाभ के लिए करना
  - विनियामक अंतर-पणन के लिए अवसर और पूरी वित्तीय प्रणाली में इसके संसर्ग की जोखिम

- आर्थिक शक्ति और प्रभाव का संकेंद्रण

- आत्मकेंद्रित व्यवसाय-प्रथा और स्व-लेन देन के विरुद्ध बचाव के उपाय (अंतर्जात और बहिर्जात)

24. **तीसरा गुण :** निष्पक्ष बनें।

चौथा गुण : शिक्षण संस्था

25. ज्ञान-संस्था को शिक्षण संस्था होना है

- आप हर दिन कुछ न कुछ सीखते हैं (आइसीआइसीआइ गर्ल)

उदाहरण

- रोगोफ और राइनहार्ट ''यह समय अलग है''
- वित्तीय संकट के 800 वर्षों के इतिहास का अध्ययन किया
- हर बार जब कोई संकट आता - अर्थशास्त्री और नीति-निर्माता कहते ''यह समय अलग है''
- फिर भी, 800 वर्षों से, सभी वित्तीय संकटों के उद्गम के पीछे वही मूलभूत कारण थे
- यह एक विवादास्पद बहस है
- इस पर बने रहने के पूर्व मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि ज्ञान-संस्था प्रत्येक अनुभव से सीख ग्रहण करने की चेष्टा करती है।

उदाहरण 2 : विनम्रता

- इसके साथ ही एक ज्ञान-संस्था में विनम्रता होनी चाहिए : हमें यह स्वीकार करना होगा कि हम सभी चीजों पर नियंत्रण नहीं रख सकते,
- यह मानने के बदले कि हमारे सिद्धांतों के अनुसार दुनिया को व्यवहार करना चाहिए, हमें दिये हुए कार्य को हाथ में लेना होगा और उसमें अपने सिद्धांतों का समावेश करना होगा।
- ज्ञात अज्ञात। हमें उत्कृष्ट ज्ञान के बारे में बिना किसी धारणा के उन्हें उसी रूप में स्वीकार करना होगा, जिस रूप में वे हैं।
  - आइंस्टीन : सापेक्षता का सिद्धांत प्रस्तुत किया
  - जीवन भर वे क्वांटम मेकैनिक्स द्वारा विवक्षित संभाव्य स्वरूप का समाधान नहीं कर सके
  - ''ईश्वर पाँसे नहीं खेलता''
  - नील्स बोह्र : यह कहना बंद करें कि ईश्वर क्या कर सकता है या क्या नहीं कर सकता

26. **चौथा गुण :** ज्ञान-संस्था सजग होती है कि इसे हमेशा शिक्षण वक्र पर रहना है।

पाँचवाँ गुण : सामान्य ज्ञान

27. ज्ञान संस्था को ज्ञानोत्पत्ति करनी होती है

- अनुसंधान
- मैने अपने अनुसंधान विभाग से कहा है कि वह अंतरराष्ट्रीय मानक के आलेखों का प्रकाशन करे।
- आरबीआई - सार्वजनिक नीति संस्था - हम गुह्य ज्ञान की उत्पत्ति नहीं करते, लेकिन हमारा ज्ञान वह होता है, जो हम अनुभव से सीखते हैं।
- यही हमारा तुलनात्मक लाभ होना चाहिए
- यहीं हमारी ज्ञानोत्पत्ति प्रकृति-विज्ञान से भिन्न होती है
- प्रकृति-विज्ञान में ज्ञान की प्रगति दुतरफा होती है
  - ज्ञान दोनों दिशाओं में जाता है
  - अनुभवमूलक निष्कर्ष से सिद्धांत तक और सिद्धांत से अनुभवमूलक निष्कर्ष तक
  - माइकेलसन मोर्ले का यह प्रयोग कि प्रकाश की गति स्थिर होती है, ने सापेक्षता के सिद्धांत की अगुआई की। अनुभव से सिद्धांत की ओर अग्रसर होना।
  - हिग्स बोसोन के लिए खोज क्वांटम सिद्धांत के भविष्यकथन से प्रेरित थी। अनुभव से सिद्धांत की ओर अग्रसर होना।
- सार्वजनिक नीति में सीखने का काम एकतरफा होता है - वास्तविक दुनिया से ज्ञान तक
- सीखने के अन्य गुण

(i) समूह सोच से बचना (जिन जोखिम प्रबंधकों ने असहमति व्यक्त की उन्हें चुप करा दिया गया) -विचारं की बहुलता। अल्पसंख्यकों की आवाज और राय सुनी जाती है और उन पर आदर पूर्वक विचार किया जाता है।

(ii) आंतरिक संसूचना बहुत महत्वपूर्ण होती है

- आरबीआई में थिमैटिक वीडियो कन्फरेंस
- दुतरफा शिक्षण प्रक्रिया होनी चाहिए
- व्यापक शिक्षण अनुभव। कुछ स्टाफ, खास कर युवा स्टाफ सूक्ष्म प्रश्न पूछते हैं

(iii) साइलो में काम नहीं करना। सभी विद्या-शाखाओं और विभागों के विचारों से प्रभावित होना

(iv) जटिलता और अनिश्चितता पर कार्रवाई करने की क्षमता।

- साइबरनेटिक्स से कोनैंट ऐशबी थ्योरम
- किसी भी प्रणाली के विनियामक के पास प्रणाली का एक मॉडल होना चाहिए, जिसका वह विनियमन करना चाहता हो।

28. **पाँचवाँ गुण :** ज्ञानोत्पत्ति के लिए वातावरण

छठा गुण : खुला, अभिव्यक्तिशील और परामर्शी

29. ज्ञान-संस्थाएँ - खुली, अभिव्यक्तिशील और परामर्शी

- केंद्रीय बैंक की संसूचना शक्ति असाधारण है
- फेड - 9/11 के बाद : 'फेडरल रिज़र्व प्रणाली खुली और परिचालनरत है । चलनिधि जरूरतों के लिए डिस्काउंट विंडो खुली है ।''
- इन दो साधारण-से वाक्यों का उल्लेखनीय प्रभाव अमेरिका और विश्व वित्तीय बाजारों को शांत करने के लिए हुआ। घोषणा का प्रभाव विलक्षण होता है।
- मारियो ड्रैगी ''जो भी आवश्यक है'' ने युरो को विफल होने से, जिसके बारे में लोग सोचते थे, बचा लिया।
- संकट के दौरान - आरबीआई ने अनिश्चितता के बारे में सूचित किया, लेकिन इसने कार्रवाई करने के लिए भी तैयारी की। शांतक प्रभाव।

  ''रिज़र्व बैंक ने सभी नीति-प्रलेखों का उपयोग करते हुए वित्तीय स्थिरता और नमनीय चलनिधि प्रबंध बनाये रखने की प्रतिबद्धता जतायी।''
- आप सोच सकते हैं कि ये सब नेमी कार्य होते हैं, भावहीन कथन, जिसमें आशय नहीं होता। यह शांति बहाल करने में अविश्वसनीय रूप से प्रभावी हो सकता है।

30. संसूचना की दुविधा - हम कितना संसूचित करते हैं?

- इसके बारे में दो मत हैं।
- पहला मत : यदि आपके पास कहने को कुछ नकारात्मक है, तो इसे कहें नहीं, क्योंकि इसका स्व-प्रबलित नकारात्मक प्रभाव होगा।
- सभी संस्कृतियों में और सब समय माताएँ अपने बच्चों से कहती हैं ''यदि तुम्हारे पास कहने को कुछ अच्छा नहीं है, तो इसे कहो ही मत''।
- वैकल्पिक मत : ''यह जैसा है, वैसा कहो। तुम्हें सच्ची तस्वीर पेश करनी चाहिए''।
  - उदाहरण : बरनान्के : बैंकिंग तनाव-परीक्षण के परिणाम
  - यदि केंद्रीय बैंक के पास विश्वसनीयता है, तो संसूचना प्रभावी हो सकती है। हमारा अपना अनुभव इस मत का समर्थन करता है।
  - मौद्रिक नीति के संबंध में प्रगामी मार्गदर्शन - सूक्ष्म अर्थांतर के लिए संघर्षरत रहें।
  - 'आगे और मौद्रिक नीति की कठोरता कम करने की बहुत कम गुंजाइश है'। गवर्नर को अंग्रेजी नहीं आती।
  - यहाँ विरोधाभास है - बाजार को मौद्रिक नीति संबंधी प्रगामी मार्गदर्शन की जरूरत तब होती है, जब अनिश्चितता होती है।

- लेकिन वह ऐसा समय होता है, जब आप निश्चित मार्गदर्शन करने में बहुत कम समर्थ होते हैं।

- संसूचना दुधारी तलवार होती है। यह गलत निर्वचन करा सकती है और इसका अनभिप्रेत परिणाम हो सकता है। क्यूई के क्रमशः कम किये जाने के संबंध में युएस फेड का हाल का वक्तव्य।

31. संसूचना को एकतरफा नहीं होना चाहिए। हमें सुनना भी चाहिए।

- टाउनहॉल सभाएँ (प्रत्येक वर्ष कम से कम एक बार। चंडीगढ़, जयपुर, पांडिचेरी)।
- 29 जून - अवैध, गैर-कानूनी वित्तीय योजनाओं पर - पोंजी, बहुस्तरीय विपणन योजनाएँ - लोगों को ठगना
- मीडिया कन्फरेंस
- नीति-पश्चात् टेलीकन्फरेंस
- नीति-पूर्व परामर्श
- परामर्शी : नीतिगत उपक्रमणों पर चर्चा-पत्र। नये बैंक लाइसेंसों पर, विदेशी बैंकों के सब्सिडियराइजेशन पर, बचत बैक जमाराशियों पर ब्याज को अविनियमित करना, ब्राइट लेबल एटीएम, जोखिम आधारित पर्यवेक्षण।

32. छठा गुण : निष्पक्ष, अभिव्यक्तिशील एवं परामर्शी

सातवाँ गुण : पहुँच-विस्तार

33. ज्ञान-संस्था - पहुँच विस्तार के लिए प्रयास करना - वास्तविक दुनिया से संपर्क।

- रिज़र्व बैंक एकांत में कार्य नहीं कर सकता।
- वृद्धि, मुद्रास्फीति, ब्याज दरें और विनिमय दरें केवल सांख्यिकी नहीं होते। ये लोगों के दैनंदिन जीवन को प्रभावित करते हैं।
- पहुँच-विस्तार कार्यक्रम सुनने, समझने और स्पष्ट करने के लिए।
- चेन्नै - टाउनहॉल मीटिंग (3 वर्ष पहले एगमोर मयुजियम में)
  - मुद्रास्फीति (अधेड़ लोग)
  - वृद्धि (युवा वर्ग)
- डीआर के लिए विलेज इमर्सन प्रोग्राम
  - गरीब लोग कैसे जीते हैं ?
  - वे अपने वित्त का प्रबंध किस प्रकार करते हैं ?
- फ्रंटलाइन मैनेजर्स कन्फरेंस
  - बीसी : बीएम मुझे लाइन में खड़ा रखवाता है
  - ग्राहकों के सामने अपमानित किया जाता है
- आप वह सीखते हैं, जो बैठकें, सेमिनार, सम्मेलन और रिपोर्ट आपको नहीं सिखाती।

34. सातवाँ गुण : पहुँच विस्तार। उस दुनिया को समझें, जिसके लिए हम नीति बनाते हैं।

आठवाँ गुण : जवाबदेही को गंभीरता से लेती है

35. ज्ञान-संस्था - जवाबदेही को गंभीरता से लेती है।

- आरबीआई के रूप में हम अपनी स्वायत्तता की रक्षा सतर्क हो कर करते हैं
- ''आरबीआई स्वतंत्र है''। हम लोकहित जानते हैं। इसमें किसी को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।
- लेकिन जिस स्वायत्तता के लिए हम इस प्रकार जोरदार ढंग से दावा करते हैं, उसे अर्जित करना होता है। माँगा नहीं जाता। इसका अर्जन करने के लिए जवाबदेही निभानी पड़ती है।
- हम अधिकारियों का एक अनिर्वाचित निकाय हैं, जो सार्वजनिक नीति बनाते हैं, जिसका निहितार्थ लोगों के दैनंदिन जीवन के लिए होता है।
- परिणामों के लिए जवाबदेह - वृद्धि, मुद्रास्फीति को स्पष्ट करना।
- चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्पर।
- गवर्नर को संसद की स्थायी समिति के सामने जाना होता है।

36. **आठवाँ गुण :** जवाबदेही को गंभीरता से लेती है ।

नौवाँ गुण : सकारात्मक सोचना

37. ज्ञान संस्था - सकारात्मक सोचना

- किसी जूता कंपनी का कार्यपालक जूतों की माँग की संभावना तलाश करता है
- कोई भी जूते नहीं पहनता - कोई माँग नहीं
- प्रतिद्वन्द्वी कंपनी : कोई भी जूते नहीं पहनता। काफी माँग।

38. **नौवाँ गुण :** सकारात्मक सोचना

दसवाँ गुण : मूल्य और नैतिकता

39. मूल्य एवं नैतिकता (प्रो, दीपंकर गुप्ता)

- संवेदनशीलता - मुद्रास्फीति और गरीब लोग।
- विनम्रता - वित्तीय बाजार दुर्व्यवहार कर रहे हैं।
- अनुकंपा
- हमेशा बड़े लोकहित की भावना बनाये रखें।

40. **अच्छा होने की कठिनाई**

- *महाभारत* के प्रत्येक पात्र में किसी-न-किसी अर्थ में नैतिक दृष्टि से कमी है। प्रत्येक घटना में *'धर्म क्या है?'* इसके बारे में एक नैतिक बहस होती है।
- *द्रोपदी युधिष्ठिर से :* आप पहले किसको हार गये?
- *भीष्म की चुप्पी* - क्या उनका धर्म सम्राट के प्रति स्वामिभक्ति का बंधक बन गया?
- ज्ञान संस्था - धर्म को बनाये रखना।

41. ज्ञान संस्था के दस गुण। व्यापक नहीं। कोई अनोखा सूचीकरण नहीं।

42. आरबीआई ने लंबा रास्ता तय किया है। ज्ञान संस्था बनना कोई घटना नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया होती है।

हमें स्वयं को स्मरण दिलाना है कि ज्ञान संस्था बनने की चुनौतियाँ और अवसर कौन-कौन से होते हैं।

43. आरबीएससी - ज्ञान संस्था बनने की दिशा में रिज़र्व बैंक की यात्रा के लिए मुख्य उत्तोलक शक्ति होगा ।

44. मेरा सौभाग्य है कि मैं इस ज्ञान संस्था में उस समय भी था, जब आरबीआई ने वर्ष 2009-10 में प्लैटिनम जयंती समारोह मनाया था और आज वर्ष 2012-13 में जब आरबीएससी अपना स्वर्ण जयंती समारोह मना रहा है, तब भी मैं यहाँ उपस्थित हूँ।